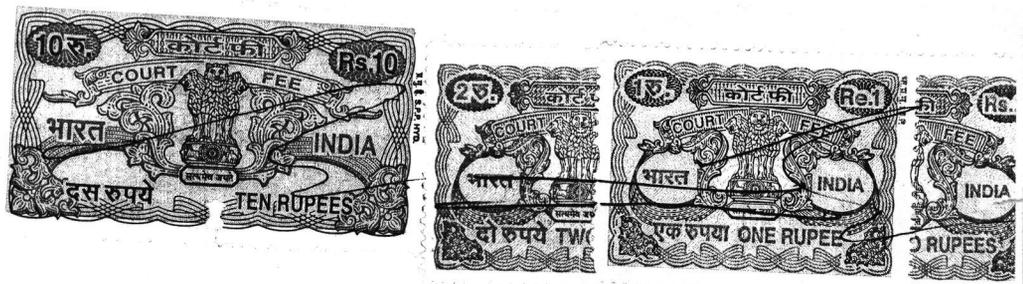


93

न्यायालय श्री मान् सदस्य महोदय राजस्व मण्डल ग्वालियर सर्किट कोर्ट रीवा,  
जिला रीवा म०प्र०

निगरानी प्रकरण क्र /2014

S10  
28/8/14



R. 3364 - III 114

Rs. 15/-

- 1- तेजा प्रसाद तनय स्व० लक्ष्मणप्रसाद ब्रा०
- 2- मय्यालाल तनय स्व० लक्ष्मणप्रसाद ब्रा०
- 3- मोतीलाल तनय स्व० लक्ष्मणप्रसाद समी का पेशा खेती निवासीगण  
ग्रामम दुआरा, थाना व तहसील मनगवां, जिलारीवा म०प्र० ----- आवेदकगण

विरुद्ध

- 1- गुलावती पत्नी स्व० विद्यापति ब्रा०
- 2- गोविन्दनारायण पिता स्व० विद्यापति ब्रा०
- 3- कृष्णप्रसाद पिता स्व० विद्यापति ब्रा० समी सा० दुआरा, थाना

व तह० मनगवां, जिलारीवा ----- अनावेदकगण

*[Handwritten signature]*

राजस्व मण्डल, मध्यप्रदेश-ग्वालियर

अनुवृत्ति आदेश पृष्ठ

प्रकरण क्रमांक निग0 3364-तीन/2014

जिला - रीवा

स्थान तथा दिनांक	कार्यवाही तथा आदेश	पक्षकारों एवं अभिभाषकों आदि के हस्ताक्षर
11-2-2015	<p>आवेदक अभिभाषक द्वारा प्रस्तुत तर्कों पर विचार किया एवं प्रकरण में उपलब्ध दस्तावेजों का अवलोकन किया गया।</p> <p>2/ अनुविभागीय अधिकारी के अंतरिम आदेश दिनांक 10-7-2014 के अवलोकन से स्पष्ट है कि अनावेदकों द्वारा तहसीलदार द्वारा खसरा क्रं 149 पर पंजी क्रमांक 1 दिनांक 16-8-2010 किये गये नामांतरण के विरुद्ध अनुविभागीय अधिकारी के समक्ष अपील प्रस्तुत की गई है। अनुविभागीय अधिकारी ने अपने आदेश में स्पष्ट विवेचना करते हुये कि खसरे की छायाप्रति के अनुसार खसरा क्रं 149 अपीलार्थीगणों की पति/पिता की भूमि थी इसलिए उनका जानकारी का हक बनता है और अपीलाधीन आदेश की जानकारी उन्हें नहीं थी।</p> <p>M0प्र0 भू-राजस्व संहिता 1959 की धारा 110 (4) के अनुसार</p> <p>“तहसीलदार हितबद्ध व्यक्तियों को सुनवाई का युक्तियुक्त अवसर देने के पश्चात तथा ऐसी अतिरिक्त जांच, जैसी कि वह आवश्यक समझे, करने के पश्चात, क्षेत्र-पुस्तक तथा अन्य सुसंगत भू-अभिलेखों में आवश्यक प्रविष्टि करेगा।”</p> <p>स्पष्ट है संहिता के प्रावधानों के अनुरूप ही अनुविभागीय अधिकारी द्वारा अनावेदकों की ओर से प्रस्तुत परिसीमा अधिनियम के अन्तर्गत प्रस्तुत धारा 5 का आवेदन स्वीकार किया जाकर प्रकरण तर्क हेतु नियत किया गया, जिसमें कोई</p>	

त्रुटि परिलक्षित नहीं होती है। अनुविभागीय अधिकारी के समक्ष प्रकरण का गुण-दोषों पर निराकरण होना है जहां आवेदक को पक्ष समर्थन का अवसर उपलब्ध है। दर्शित परिस्थितियों में आवेदक द्वारा प्रस्तुत निगरानी अग्राह्य की जाती है। प्रकरण दाखिल रिकार्ड हो।

(डा० मधु खरे)  
सदस्य